

खुल रहे हैं ग्रहों के रिंगों के रहस्य

ग्रहीय वलयों (रिंगों) के बारे में पिछली चार शताब्दियों में करीब कई हजार लेख व सैकड़ों किताबें लिखी गईं तथा लाखों फोटोग्राफ लिए गये। लेकिन वैज्ञानिक व खगोलशास्त्री अभी तक उनके बारे में कोई निश्चित राय नहीं बना सके हैं। हमारे सौरमंडल के चार ग्रह वृहस्पति, शनि, यूरेनस और नेपच्यून ग्रहीय वलय की श्रेणी में आते हैं। यह चारों ग्रह एक वलय (रिंग) से घिरे हुए हैं। अब इन वलय के रहस्यों को प्राप्त जानकारियों के आधार पर वैज्ञानिक सुलझाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

हाल में ही शनि ग्रह के चारों ओर बने वलय की उत्पत्ति के रहस्य से पर्दा हट गया है। अभी तक इस ग्रह को चारों ओर से घेरने वाले वलय की उत्पत्ति के बारे में पता नहीं था। वैज्ञानिकों का दावा है कि चार अरब वर्ष पहले बड़े उपग्रह के अंतरिक्ष में ही नष्ट होने की घटना के कारण शनि के चारों ओर वलय और आंतरिक चंद्रमा का निर्माण हुआ। कोलोराडो में साउथवेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट के शोधकर्ताओं के अनुसार 4.5 अरब वर्ष पहले टाइटन के आकार के उपग्रह से शनि ग्रह के टकराने के बाद इस शानदार वलय का निर्माण हुआ। इसके साथ ही शनि ग्रह के आंतरिक तक का भी निर्माण हुआ । शनि के इस भव्य वलय में इस समय 90 से 95 प्रतिशत तक पानी और बर्फ है।

चट्टानी धूमकेतु का मलबा और धूल के इस वलय पर पड़ने से इसका रंग कुछ फीका पड़ गया है, लेकिन ऐसा माना जाता है कि जब इस खूबसूरत वलय का निर्माण हुआ होगा तो यह शुद्ध बर्फ से बना होगा। सौरमंडल के बाहर का पदार्थ आधा बर्फ और आधा चट्टानों का मिश्रण है। इस लिहाज से शनि के वलय की संरचना बेमिसाल है। इसी तरह शनि के आंतरिक चांद का कम घनत्व भी सधन बर्फ को दर्शाता है। यह अध्ययन नेचर जर्नल के ताजा अंक में प्रकाशित हुआ है। पहले के अध्ययन में पाया गया था कि शनि के वलय का निर्माण धूमकेतु द्वारा छोटे-छोटे उपग्रह को अस्त-व्यस्त करने से हुआ।

शनि के वलय के बारे में सर्वप्रथम खगोलशास्त्री गैलीलियो ने सन् 1610 में बताया। सन् 1663 में डच वैज्ञानिक सी. ड्राइस ने एवं 1685 में फ्रेंच खगोलशास्त्री डी. कासिनी ने शनि के दूसरे एवं तीसरे वलय का पता लगाया। चौथे वलय की खोज सन् 1969 में पिपरे गुवेरिन ने की। पायनियर-11 ने शनि के तीन और वलय की खबर दी। यह अंतरिक्ष यान 5 अप्रैल 1972 को कैनेडी अंतरिक्ष अड्डे से छोड़ा गया था। शनि के वलय धूल एवं बर्फ के छोटे-छोटे कणों के मिलकर बने हैं। इन कणों का औसत व्यास 2.5 मिलीमीटर है।

हाल में ही शनि ग्रह के चारों ओर बने वलय की उत्पत्ति के रहस्य से पर्दा हट गया है। अभी तक इस ग्रह को चारों ओर से घेरने वाले वलय की उत्पत्ति के बारे में पता नहीं था। वैज्ञानिकों का दावा है कि चार अरब वर्ष पहले बड़े उपग्रह के अंतरिक्ष में ही नष्ट होने की घटना के कारण शनि के चारों ओर वलय और आंतरिक चंद्रमा का निर्माण हुआ। कोलोराडो में साउथवेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट के शोधकर्ताओं के अनुसार 4.5 अरब वर्ष पहले टाइटन के आकार के उपग्रह से शनि ग्रह के टकराने के बाद इस शानदार वलय का निर्माण हुआ। इसके साथ ही शनि ग्रह के आंतरिक चांद् का भी निर्माण हुआ । शनि के इस भव्य वलय में इस समय 90 से 95 प्रतिशत तक पानी और बर्फ है। चट्टानी धूमकेतु का मलबा और धूल के इस वलय पर पड़ने से इसका रंग कुछ फीका पड़ गया है, लेकिन ऐसा माना जाता है कि जब इस खूबसूरत वलय का निर्माण हुआ होगा तो यह शुद्ध बर्फ से बना होगा।

हाल में ही शनि ग्रह के चारों ओर बने वलय की उत्पत्ति के रहस्य से पर्दा हट गया है। अभी तक इस ग्रह को चारों ओर से घेरने वाले वलय की उत्पत्ति के बारे में पता नहीं था। वैज्ञानिकों का दावा है कि चार अरब वर्ष पहले बड़े उपग्रह के अंतरिक्ष में ही नष्ट होने की घटना के कारण शनि के चारों ओर वलय और आंतरिक चंद्रमा का निर्माण हुआ। कोलोराडो में साउथवेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट के शोधकर्ताओं के अनुसार 4.5 अरब वर्ष पहले टाइटन के आकार के उपग्रह से शनि ग्रह के टकराने के बाद इस शानदार वलय का निर्माण हुआ। इसके साथ ही शनि ग्रह के आंतरिक चांद् का भी निर्माण हुआ । शनि के इस भव्य वलय में इस समय 90 से 95 प्रतिशत तक पानी और बर्फ है। चट्टानी धूमकेतु का मलबा और धूल के इस वलय पर पड़ने से इसका रंग कुछ फीका पड़ गया है, लेकिन ऐसा माना जाता है कि जब इस खूबसूरत वलय का निर्माण हुआ होगा तो यह शुद्ध बर्फ से बना होगा।

हाल में ही शनि ग्रह के चारों ओर बने वलय की उत्पत्ति के रहस्य से पर्दा हट गया है। अभी तक इस ग्रह को चारों ओर से घेरने वाले वलय की उत्पत्ति के बारे में पता नहीं था। वैज्ञानिकों का दावा है कि चार अरब वर्ष पहले बड़े उपग्रह के अंतरिक्ष में ही नष्ट होने की घटना के कारण शनि के चारों ओर वलय और आंतरिक चंद्रमा का निर्माण हुआ। कोलोराडो में साउथवेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट के शोधकर्ताओं के अनुसार 4.5 अरब वर्ष पहले टाइटन के आकार के उपग्रह से शनि ग्रह के टकराने के बाद इस शानदार वलय का निर्माण हुआ। इसके साथ ही शनि ग्रह के आंतरिक चांद् का भी निर्माण हुआ । शनि के इस भव्य वलय में इस समय 90 से 95 प्रतिशत तक पानी और बर्फ है। चट्टानी धूमकेतु का मलबा और धूल के इस वलय पर पड़ने से इसका रंग कुछ फीका पड़ गया है, लेकिन ऐसा माना जाता है कि जब इस खूबसूरत वलय का निर्माण हुआ होगा तो यह शुद्ध बर्फ से बना होगा।

वैज्ञानिकों के लिए आज भी यह काफी रहस्य का विषय है कि यह वलय अस्त व्यस्त क्यों नहीं होते हैं।

शनि का पहला वलय, उसकी सतह से 12000 से 13800 किमी की दूरी पर है। दूसरा वलय 87000 से 116000 किमी की दूरी पर एवं तीसरा वलय 7,००,०00 से 8,7०,००0 किमी की दूरी पर है। चौथा



वलय केन्द्र के सबसे निकट है। पांचवा वलय 3,5०,००0 किमी की दूरी पर छठवां वलय 3,53,5०0 किमी एवं सातवां वलय केन्द्र से 5,4०,००0 किमी से 8,4०,०0 किमी के बीच है। यह सभी वलय शनि के चारों तरफ घूमते हैं। इस बारे में अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के डॉ. एथेनी डेलजियो के विचार है कि इस दूरी से हम शनि का सामान्य झुका हुआ पट्टियों युक्त चेहरा ही देख सकते हैं, लेकिन हम इतना अवश्य जानते हैं कि जैसे ही हम इसके और नजदीक जाएंगे, ये पट्टियां हमारी आंखों के सामने से खुलती जाएंगी और इनमें छोटी-छोटी घटनाएं और रचनाएं जैसे चिह्न, तूफान, आंधी दिखाई देने लगेंगी और शनि हमारे सामने कई गुना विशाल स्वरूप में खड़ा होगा। यह कल्पना इतनी रोमांचक है कि इसके लिए अब और ज्यादा इंतजार नहीं किया जा सकता है। भले ही हमें यह पता है कि इसे देखने के लिए अभी दो-तीन महीने इंतजार करना होगा। कैसिनी की इमेजिंग

सार्इस टीम के प्रमुख डॉ. कैरोलीन पोर्कों की राय में यह एक रोचक अनुभव होगा। वे लोग जो दशकों से इस अभियान की तैयारी में लगे हुए हैं, उन्हें कैसिनी कैमरों के सामने धीरे-धीरे शनि का विशाल आकार लेना ठीक वैसा ही है जैसा अनुभव बच्चे क्रिसमस की सुबह घर की सीढ़ियां उतरकर नीचे यह देखने आते हैं कि क्रिसमस ट्री के नीचे



कौन-सा उपहार उनकी प्रतीक्षा कर रहा है। जो लोग 23 वर्ष पहले शनि की यात्रा से जुड़े हुए हैं, उनके लिए यह एक भावनापूर्ण यात्रा होगी। कुछ लोगों को वह भुलाए नहीं भुलता जब उन्होंने पहली बार वायजर से शनि की वलयों को देखा था। ‘बी’ रिंग की छड़े और गुंथी हुई ‘एफ’ रिंग और उसके इर्द-गिर्द मंडराते चंद्रमा का नजारा आंखों के लिए अविस्मरणीय था। आम लोगों के लिए शनि का यह नजारा भले ही दर्शनीय हो, लेकिन अंतरिक्ष वैज्ञानिकों की आत्मा ही जानती है कि इसके लिए उन्हें कितना परिश्रम करना पड़ा है। कैसिनी अभियान के आरंभ होने पर नासा के सौलर सिस्टम एग्ज्लोरेशन डिवीजन के निदेशक वेस्ले हंटर्स कहते हैं- ‘वाह ! कितनी दूरी हमने तय की है। यह दिन देखने के लिए हमने कितने प्रयास किए हैं और हमारे लिए यह कितना कीमती है।’ एक जुलाई 2०04 को जब कैसिनी शनि की कक्षा में प्रवेश करेगा, इसका चार वर्षीय

अभियान आरंभ हो जाएगा। इसमें अमेरिका तथा यूरोप ने 14 कैमरा टीमों के वैज्ञानिक शनि की कई विशेषताओं, इसके चंद्रमाओं तथा वलयों की सूक्ष्म जांच में संलग्न हो आएंगे।

इसके पूर्व 24 जनवरी 1986 को वायजर-2 यूरेनस के वलयों के सबसे निकटतम दूरी (1,०7,०00) से गुजरा था। पृथ्वी से 64 गुना बड़े इस ग्रह का वजन केवल 15 पृथ्वी के बराबर की जा सकती है। इसका घनत्व भी पृथ्वी से कम है। यूरेनस के सभी नौ वलय 1,००,००0 किमी से कम चौड़े हैं। लेकिन इनकी तुलना 2,5०,००0 किमी परिधि के बराबर की जा सकती है, इनमें तो आठ तो 100 किमी के आस-पास चौड़े हैं। यह सभी वलय वृत्ताकार अंतरिक्षीय वलय है। इनमें 6 परिवर्तन चौड़ाई के दीर्घवृत्ताकार वलय है। धूल और बर्फ के यह वलय आकार में बदतर होते हैं। लेकिन यह अस्त-व्यस्त नहीं होते हैं। इन वलयों की सबसे बड़ी विशेषता यही है। इन वलयों का सर्वप्रथम चित्र 1984 में लिया गया। यूरेनस की सतह से 800 किमी दूर विविध चौड़ाई के अधिकांश बाहरी वलयों का चित्र स्पष्ट रूप से लिया गया था। 18 उपग्रहों वाला यह ग्रह अतिशय ठंडा होने के कारण इसका तापमान लगभग शून्य के नीचे है। सूर्य पश्चिम में उदित होकर पूर्व में अस्त होने वाले इस ग्रह के वलयों के बारे में खगोल शास्त्री अभी कोई राय नहीं बना सके हैं। हमारे सौरमंडल का सबसे बड़ा ग्रही जूपिटर, पांचवे स्थान पर स्थित है। पृथ्वी की ही तरह जूपिटर के भी चारों

इल टाँ र अले बट्टानाँ और प्रोटानाँ की विकिरण पट्टिचम में उदित होकर पूर्व में अस्त होने वाले इस ग्रह के वलयों के बारे में खगोल शास्त्री अभी कोई राय नहीं बना सके हैं। हमारे सौरमंडल का सबसे बड़ा ग्रही जूपिटर, पांचवे स्थान पर स्थित है। पृथ्वी की ही तरह बट्टानाँ और प्रोटानाँ की विकिरण

पट्टियां हैं। लेकिन यह पृथ्वी की अपेक्षा दस लाख गुना अधिक शक्तिशाली है। जूपिटर के चारों तरफ चार चमकीले वलय हैं। पहला वलय लगभग 600 किमी दूर पर है। इस वलय का बाहरी हिस्सा बहुत ही चमकीला है। इसकी लंबाई लगभग 800 किमी है। इसके वलयों का घनत्व शनि के वलयों के मुकाबले लगभग 1०0 गुना कम है। चमकीली और गाढ़ी दिखने वाली विषुवत रेखा के समान्तर फैली हुई पट्टियां वास्तव में ऊपर उठती और नीचे जाती हुई वायुमंडल की तहें हैं। नेपच्यून ग्रही के वलयों के बारे में हमारी जानकारी अभी न के बराबर ही है। 4,15,००0 किमी व्यास वाले इस ग्रह का वजन हमारी 17 पृथ्वियों के बराबर है। इसका घनत्व जूपिटर, शनि और यूरेनस से कुछ अधिक है। अब वैज्ञानिकों द्वारा उम्मीद की जा रही है भविष्य में वे ग्रहीय वलय के रहस्यों को सुलझा लेंग।

—राजेन्द्र कुमार राय

विविध

—राजेन्द्र कुमार राय

निखिल धाम मंदिर का निर्माण केवल दस महाविद्याओं की साधना के लिए ही नहीं किया गया है, बल्कि यह जीवन में प्रकाश, प्रकाश के उत्सर्जन, उसके स्थान्तरण, मौजूदगी, एहसास, प्रकाशमय बनने और उसके जरिये प्रकाशित होने की क्रिया सिखाने का अध्यात्मिक परम कर्म का निर्माण भी है। निखिल धाम भोपाल के नजदीक भोजपुर में स्थिति है और दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई और दूसरे सभी शहरों से भोपाल होते हुए हवाई, रेल और सड़क मार्ग से यहां आसानी से पहुंचा जा सकता है।

आ चारों गुजरात और दिल्ली के अक्षरधाम मंदिर के आकर्षण को ना भूल पा रहे हों, पर भोपाल से करीब तीस किलोमीटर की दूरी पर भोजपुर के निकट पांच एकड़ में बना निखिल धाम मंदिर अब न केवल अध्यात्मक दृष्टि से बल्कि इस मंदिर में दस महाविद्याओं की स्थापना के सिद्धस्त कलाकारों द्वारा बनायी गयी है। यही नहीं निखिल धाम मंदिर के आस-पास और उसके प्रांगण में शुद्ध तंत्र साधना के लिए अद्वितीय दुर्लभ और लुप्तप्राय पेड़ और जड़ी बूटियों के साथ कई ऐसे वृक्ष भी लगाए जा रहे हैं, जो अब देश के ही कुछ ही हिस्सों में पाए

बन गयी है, जहां हर समय एक शुद्ध आध्यात्मिक ऊर्जा प्रवाह होती रहती है। लेकिन निखिल धाम मंदिर सिर्फ दस महाविद्याओं की स्थापना के लिए ही प्रसिद्ध नहीं होने जा रहा है, बल्कि गिगत ग्यारह वर्षों से यहां मासिक पत्रिका साधना सिद्धि विज्ञान का प्रकाशन भी नियमित किया जा रहा है। यह पत्रिका पूरी तरह से आदि शंकराचार्य और सद्गुरुदेव स्वामी निखिलेश्वरानंदजी की शिक्षाओं को समर्पित की गयी है। गौरतलब है कि स्वामी निखिलेश्वरानान्दजी ने 1998 में अपनी शरीर का त्याग कर दिया था और तब से लेकर आज तक गुरुदेव सुदर्शन और गुरुमाता डॉ. साधना सिंह उनके पदचिह्नो

जाते हैं। इस मंदिर की योजना और अवधारणा महाविद्या साधक परिवार के गुरुदेव श्रीसुदर्शन स्वामी और गुरुमाता डॉ. साधना सिंह के नेतृत्व में सन् 1999 में बनाई गई थी। महाविद्या साधक परिवार सद्गुरुनथा परमश्रम स्वामी श्री निखिलेश्वरानंद महाराज के सिद्धांतों पर आधारित है और इस परिवार के साधक दसों महाविद्याओं के साधना में जुड़े हुए हैं। इस मंदिर में स्वामी निखिलेश्वरानान्दजी की चैतन्य मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा तीन साल पहले की गयी थी। धार्मिक दृष्टि से देखा जाये तो निखिल धाम एक अद्वितीय स्थान है, क्योंकि यहां सरबेश्वर समेत अन्य देवताओं की स्थापना भी एक ही जगह की गयी है और दो साल पहले शिवरात्रि के शुभ अवसर पर इन दसों महाविद्यालयों की शिला स्थापना की गयी थी, जिसके कारण निखिल धाम अब ऐसी जगह भी

है। इन वलयों की सबसे बड़ी विशेषता यही है। इन वलयों का सर्वप्रथम चित्र 1984 में लिया गया। यूरेनस की सतह से 800 किमी दूर विविध चौड़ाई के अधिकांश बाहरी वलयों का चित्र स्पष्ट रूप से लिया गया था। 18 उपग्रहों वाला यह ग्रह अतिशय ठंडा होने के कारण इसका तापमान लगभग शून्य के नीचे है। सूर्य पश्चिम में उदित होकर पूर्व में अस्त होने वाले इस ग्रह के वलयों के बारे में खगोल शास्त्री अभी कोई राय नहीं बना सके हैं। हमारे सौरमंडल का सबसे बड़ा ग्रही जूपिटर, पांचवे स्थान पर स्थित है। पृथ्वी की ही तरह बट्टानाँ और प्रोटानाँ की विकिरण

महाविद्याओं का एक अनोखा मंदिर है निखिल धाम

आ चारों गुजरात और दिल्ली के अक्षरधाम मंदिर के आकर्षण को ना भूल पा रहे हों, पर भोपाल से करीब तीस किलोमीटर की दूरी पर भोजपुर के निकट पांच एकड़ में बना निखिल धाम मंदिर अब न केवल अध्यात्मक दृष्टि से बल्कि इस मंदिर में दस महाविद्याओं की स्थापना के लिए ही प्रसिद्ध नहीं होने जा रहा है, बल्कि गिगत ग्यारह वर्षों से यहां मासिक पत्रिका साधना सिद्धि विज्ञान का प्रकाशन भी नियमित किया जा रहा है। यह पत्रिका पूरी तरह से आदि शंकराचार्य और सद्गुरुदेव स्वामी निखिलेश्वरानंदजी की शिक्षाओं को समर्पित की गयी है। गौरतलब है कि स्वामी निखिलेश्वरानान्दजी ने 1998 में अपनी शरीर का त्याग कर दिया था और तब से लेकर आज तक गुरुदेव सुदर्शन और गुरुमाता डॉ. साधना सिंह उनके पदचिह्नो

जाते हैं। इस मंदिर की योजना और अवधारणा महाविद्या साधक परिवार के गुरुदेव श्रीसुदर्शन स्वामी और गुरुमाता डॉ. साधना सिंह के नेतृत्व में सन् 1999 में बनाई गई थी। महाविद्या साधक परिवार सद्गुरुनथा परमश्रम स्वामी श्री निखिलेश्वरानंद महाराज के सिद्धांतों पर आधारित है और इस परिवार के साधक दसों महाविद्याओं के साधना में जुड़े हुए हैं। इस मंदिर में स्वामी निखिलेश्वरानान्दजी की चैतन्य मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा तीन साल पहले की गयी थी। धार्मिक दृष्टि से देखा जाये तो निखिल धाम एक अद्वितीय स्थान है, क्योंकि यहां सरबेश्वर समेत अन्य देवताओं की स्थापना भी एक ही जगह की गयी है और दो साल पहले शिवरात्रि के शुभ अवसर पर इन दसों महाविद्यालयों की शिला स्थापना की गयी थी, जिसके कारण निखिल धाम अब ऐसी जगह भी

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय

—राजेन्द्र कुमार राय